इकाई 17 परवर्ती रोमन संसार

इकाई की रूपरेखा

17.1 प्रस्तावना

खंड 3 की इकाई 13 में रोमन साम्राज्य के निर्माण की प्रक्रिया पर हम विचार कर चुके हैं। आपने गौर किया होगा कि आरंभ में यह रोमन गणतंत्र था। 264 ई. पू. से 146 ई. पू. तक तीन प्यूनिक युद्धों की मदद से इस गणतंत्र ने अपने क्षेत्र का विस्तार किया और एक साम्राज्य बन गया। रोमनों ने समस्त इतालवी प्रायद्वीप, गॉल (फ्रांस), स्पेन, दक्षिण अफ्रीका, मिस्र और पश्चिम एशिया के अन्य हिस्सों को अपने कब्जे में ले लिया। रोमन गणतंत्र ने द्वितीय शताब्दी ई. पू. के मध्य तक सम्पूर्ण भूमध्यसागरीय क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया और चौथी शताब्दी ई. तक रोम शहर रोमन साम्राज्य की राजधानी बना रहा। हमने इस पक्ष पर भी विचार किया है कि किस प्रकार रोमन गणतंत्र

की शक्ति सेनेट में निहित थी और सभी प्रमुख मुद्दों पर राजा को सेनेट से मंजूरी लेनी पड़ती थी। यहां इस इकाई में हम ईसवी काल के आंरभ से रोमन साम्राज्य में होने वाले परिवर्तनों की चर्चा करेंगे।

प्रथम शताब्दी ई. के आरंभ में सेनेट ने अपनी शक्ति खो दी और धीरे-धीरे राजतंत्र की व्यवस्था में कई बदलाव आए। तीसरी शताब्दी ई. के अन्त तक साम्राज्य अलग-अलग प्रशासनिक क्षेत्रों में विभाजित हो गया। चौथी शताब्दी ई. तक साम्राज्य औपचारिक रूप से पूर्वी रोमन साम्राज्य और पश्चिमी रोमन साम्राज्य में विभाजित हो गया और क्रमशः कौन्सटैंटिनोपल और रोम इसकी राजधानियां बनीं। हालांकि पांचवी शताब्दी तक आते-आते पश्चिमी रोमन साम्राज्य नहीं रहा और केवल पूर्वी रोमन साम्राज्य का अस्तित्व ही बचा रहा।

आर्थिक ढांचे में भी परिवर्तन हुआ। नई कर व्यवस्था लागू की गई और मुद्रा अर्थव्यवस्था लागू हुई तथा अर्थव्यवस्था में विभिन्न वर्गों की भूमिकाएं परिवर्तित हुईं। समाज में भी कई प्रकार के परिवर्तन हुए। संस्था के रूप में दास प्रथा और उच्च और निम्न वर्ग की स्थितियों में भी बदलाव आया। इन आरंभिक शताब्दियों में धर्म के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ।

ईसाई धर्म रोमन संसार के सम्पर्क में आया। रोमन सम्राट कौन्सटैनटाइन ने ईसाई धर्म को संरक्षण प्रदान किया। इसके बाद धीरे-धीरे कई पंथ और देवी-देवता लुप्त होते चले गए और ईसाई धर्म और आस्था उनका स्थान लेता चला गया और रोमन साम्राज्य के अधीन आने वाले तमाम क्षेत्रों पर यही बात लागू हुई।

परवर्ती रोमन साम्राज्य की राजनीतिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, समाज और धर्म में हुए परिवर्तनों ने समकालीन रोमन संसार को प्रभावित किया और आरंभिक मध्ययुग में यूरोप और एशिया के इतिहास पर इसका दूरगामी प्रभाव पड़ा।

सबसे पहले हम रोमन साम्राज्य के संक्षिप्त परिचय के साथ अपनी चर्चा का आरंभ करेंगे और इसके बाद परवर्ती रोमन संसार के राज्य, धर्म और समाज की चर्चा की जाएगी। इस भाग में हम तीसरी ई. के अंत के आसपास होने वाले विकासों का संक्षिप्त सर्वेक्षण करेंगे।

17.2 आरंभिक पृष्ठभूमि

44 ई. पू. में जूलियस सीजर की मृत्यु के बाद ऑक्टेवियन को अपने दुश्मनों को हराने में 13 वर्ष तक संघर्षरत रहना पड़ा और युद्ध करना पड़ा। 31 ई. पू. में वह रोम का शासक बना। गणतंत्र की परम्पराओं को देखते हुए सम्राट के रूप में उसका गद्दी पर बैठना काफी मुश्किल था। इसलिए उसने अपने को सम्राट नहीं कहा बल्कि अपने को प्रिंसेप या प्रथम नागरिक कहा। सेनेटरों को नाराज न करने के लिए उसने गणतंत्र की सभी संस्थाओं को बरकरार रखा परंतु महत्वपूर्ण पदों पर अपने लोगों को नियुक्त किया। उसने प्रांतों को अपने नियंत्रण में ले लिया और उन पर शासन करने के लिए सेनेट द्वारा प्रतिनिधियों की नियुक्ति करवाई। सेनेट ने उसे आगस्तस (Augustus) यानी 'पूज्य' की पदवी से सम्मानित किया। उसने ईसवी सन 14 तक मृत्युपर्यन्त चार दशकों तक शासन किया। उसके शासनकाल में गणतंत्रीय संस्थाएं (खासतौर पर सेनेट) नाममात्र को ही अस्तित्व में थी क्योंकि सारी शक्ति राजा के हाथों में सिमट चुकी थी।

आगस्तस के शासनकाल में रोमन राज्य के तीन घटक थे –सम्राट, सेनेट-कुलीनतंत्र और सेना तथा आगस्तस राज्य के इन तीनों घटकों के बीच संतुलन बनाए रखने में कामयाब रहा। नौकरशाह प्रमुख रूप से *इक्वेस्ट्रियनों* (equestrians) में से नियुक्त किए जाते थे।

इक्वेस्ट्रियन में प्लेबियन और पैट्रिसियन शामिल होते थे। आगस्तस के जमाने में स्पेन और गॉल (फ्रांस) में नए उपनिवेश बसाए गए और दोनो क्षेत्रों में विशाल भू-क्षेत्र पनपे जिन्हें 'लैटिफुंडिया' के नाम से जाना गया। दोनों ही देशों में नए शहरी केन्द्र और नगर विकसित हुए जहां से लैटिन संस्कृति स्पेन और गॉल के देहातों में पंहुची। रोमन साम्राज्य के अफ्रीकी क्षेत्रों में भी लैटिन संस्कृति की घुसपैठ हो गई। ये प्रांत आधुनिक मोरक्को और इथोपिया देश हैं। मिस्र और सीरिया पर कब्जा हो जाने के बाद पूरा भूमध्यसागरीय क्षेत्र रोमनों के अधिकार में आ गया। भूमध्यसागरीय क्षेत्र के एकीकरण से लम्बी दूरी के समुद्री व्यापार को बढ़ावा मिला।

अपने शासन के दौरान आगस्तस ने सम्पूर्ण सत्ता अपने हाथों में ले ली और औपचारिकता के रूप में सेनेट की मंजूरी भी ले ली। इस समय तक आगस्तस को ईश्वर समतुल्य सम्राट के रूप में प्रचारित किया जाने लगा था। हालांकि जूलियस सीजर की हत्या के बाद ही ईश्वर समतुल्यता की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी थी। आगस्तस ने वर्षों शांति और स्थायित्व का जो दौर शुरू किया वह लगभग 200 वर्षों तक कायम रहा। इस युग को *पैक्स रोमाना* (pax Romana) (रोमन शांति) के नाम से जाना जाता है।

सन् ई. 14 में आगस्तस की मृत्यु हो गई और उसका दत्तक पुत्र ताइबेरियस (Tiberius) सम्राट बना। उसने सन् ई. 37 तक शासन किया। सन् ई. 14 से लेकर 68 तक चार शासकों ने शासन किया। ये सभी उसके या उसकी तीसरी पत्नी लीविया के रिश्तेदार थे। इन्हें जुडियो-क्लाउडियन (Judio-claudian) राजवंश के नाम से जाना गया। सन् ई. 68 में इस राजवंश के अंतिम शासक नीरो की आत्महत्या के बाद इस राजवंश के शासन का अंत हो गया। इसके बाद थोड़े दिनों तक गृह युद्ध चला और सन ई. 68 में वेसपैसियन (Vespasian) (सन् ई. 69–81) ने रोमन साम्राज्य पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। उसके बाद उसके दो पुत्र टाइटस (Titus) (सन ई. 79–81) और डोमिशियन (Domitian) (81–96) गद्दी पर बैठे। सन ई. 96 में डोमिशियन हत्या कर दी गई। नए सेनेट ने नेरवा (Nerva) का चयन किया (96–98)। नेरवा केवल दो वर्ष शासन कर सका। उसने ऊपरी जर्मनी के गवर्नर ट्रोजन (Trojan) को अपना उत्तराधिकारी बनाया। ट्रोजन ने 98 से 117 ई. तक शासन किया। नेरवा ने उत्तराधिकारी के चयन की जो प्रक्रिया शुरू की थी वह उसके उत्तराधिकारियों ने 180 ई. तक जारी रखी। 98 से 180 तक की अवधि में ट्रोजन (98–117), हैड्रियन (Hadrian) (117–138), एन्टोनिनस पिउस (Antoninus Pius) (138–161) और मारकस औरेलिअस (Marcus Aurelius) (161–180) जैसे प्रमुख शासकों ने शासन किया। इस अवधि में साम्राज्य शक्तिशाली और समृद्ध हुआ। इनके शासन काल में सड़क, बन्दरगाह, जल व्यवस्था और सिंचाई सुविधा जैसे आधारभूत ढांचों के विकास से कृषि और व्यापार के क्षेत्र में काफी वृद्धि हुई। कानून और व्यवस्था में काफी सुधार हुआ और न्याय तथा शांति कायम हुई। इस समृद्ध समय के बाद *पैक्स रोमाना* का युग समाप्त हो गया। दूसरी शताब्दी ई. के अन्त तक रोमन साम्राज्य की राजनीतिक स्थिति स्थिर रही। अब सेनेट एक मृत राजनीतिक संस्था रह गई थी। इटली के बाहर भूमिपति वर्ग प्रिंसिपेट के दौरान साम्राज्यी व्यवस्था के अंग हो गए थे। तीसरी शताब्दी के मध्य तक रोमन साम्राज्य में शासक वर्ग का स्वरूप मिश्रित हो गया था। सीरिया, फिलिस्तीन और अनातोलिया में रोमन उपस्थिति के बावजूद पश्चिम एशिया में पार्थियन (ईरान) सबसे प्रमुख राजनीतिक व्यवस्था और सैनिक ताकत बनी रही।

17.3 परवर्ती रोमन साम्राज्य

लगभग सौ वर्षों की लम्बी अव्यवस्था और अस्थिरता के बाद, जिसमें रोमन साम्राज्य पर बीस से अधिक सम्राटों ने शासन किया और सम्राट, सेनेट और सेना के बीच त्रिकोणीय

संघर्ष चलता रहा, 284 ई. में डायक्लीशन (Diocletian) (284–305 ई.) सत्ता में आया और उसने साम्राज्य को स्थिरता प्रदान की। उसने प्रशासन को चुस्त दुरूस्त किया और इसके लिए उसने साम्राज्य को चार स्वायत्त हिस्सों में विभाजित किया और प्रत्येक हिस्से पर एक सम्राट का शासन स्थापित किया गया। डायक्लीशन को पूर्वी हिस्सा (निको मेदिया), मैक्सिमन (Maximan) को इटली और अफ्रीका; कॉन्स्टैनटियस को स्पेन, गॉल और ब्रिटेन तथा गैलेरियस (Galerius) को इलरिकम (Illyricum), मक्दूनिया और ग्रीस प्राप्त हुआ। डायक्लीशन के प्रभावशाली और शक्तिशाली व्यक्तित्व के कारण चार सम्राटों के शासन के बावजूद कोई समस्या नहीं आई। डायक्लीशन की सेवानिवृत्ति के बाद कौन्सटैनटाइन I (306–337) इस साम्राज्य का सम्राट बना। राजवंशीय महात्वाकांक्षाओं के कारण चार सम्राटीय शासन की समाप्ति हुई। 324 ई. तक कौन्सटैनटाइन का पूरे साम्राज्य पर नियंत्रण हो गया था और वह सर्वाधिक शक्तिशाली और निरंकुश सम्राट बन गया। कौन्सटैनटाइन I ने कौन्सटैंटिनोपल शहर (आज का तुर्की का इस्तनबुल शहर) की स्थापना की जो रोमन साम्राज्य के पूर्वी हिस्से की राजधानी बना। इस प्रकार कौन्सटैनटाइन I ने रोमन साम्राज्य की राजधानी पूरब की ओर ले जाने की प्रक्रिया पूरी कर दी। इसके साथ ही रोम की राजनीतिक भूमिका समाप्त हो गई। कौन्सटैनटाइन I के शासन काल में रोमन राज्य का स्वरूप बिलकुल बदल गया। डायक्लीशन और कौन्सटैनटाइन इस परिवर्तन के प्रमुख स्थापत्यकार थे। कौन्सटैनटाइन I पहला रोमन सम्राट था जिसने साम्राज्य में ईसाइयों पर होनेवाले अत्याचारों पर रोक लगाई और अपनी मृत्यु के ठीक पहले ईसाई धर्म में दीक्षा ग्रहण कर ली। कौन्सटैनटाइन की मृत्यु के बाद कौन्सटैनटियस (337–61ई.), वैलेनटिनियन (364–75 ई.), वैलेना (Valena) 375–78 और थियोडोसियस (Theodosius) (379–395) प्रमुख सम्राट बने। थियोडोसियस ने 391 ई. तक शासन किया। ईसाई धर्म राज्य धर्म बन गया और सभी गैर-ईसाई सम्प्रदायों पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

थियोडोसिअस की मृत्यु के बाद 395 ई. में रोमन साम्राज्य उसके दो पुत्रों के बीच दो साम्राज्यों पश्चिम रोमन साम्राज्य और पूर्वी रोमन साम्राज्य में विभक्त हो गया। आर्केडियस (Arcadias) पूर्वी रोमन साम्राज्य का सम्राट बना और उसने कौन्सटैंटिनोपल को राजधानी बनाया। होनोरियस (Hanorius) ने पश्चिमी रोमन साम्राज्य की बागडोर संभाली और रोम उनकी राजधानी बनी। आर्केडियस को विसिगोथिकों (Visigothics) और होनोरियस को वैन्डल्स (Vandals) का समर्थन प्राप्त था।

चौथी शताब्दी के मध्य से केन्द्रीय एशिया के कबीलों के पूर्वी यूरोप में हस्तक्षेप में तेजी आई। उनके द्वारा बनाए गए दबावों के परिणामस्वरूप रोमन क्षेत्रों पर जर्मनी के कबीले भी अपनी गतिविधि बढ़ाने लगे। चौथी शताब्दी के अंत और पांचवीं शताब्दी के आरंभ में जर्मन कबीले रोमन क्षेत्रों में आक्रमण करने लगे और सीमाएं टूटने लगीं। वैन्डल्स के सुरबी (Surbi) और अलानी (Alani) कबीले राइन पार करके रोम के पश्चिमी प्रांतों पर कब्जा जमाने लगे। इनके बाद विसिगोथ (Visigoths), अस्ट्रोगोथ (Ostrogoths) और बरगनडियन (Burgundians) कबीलों का आगमन हुआ। अन्त में 410 ई. में विसिगोथ कबीले ने रोम पर आक्रमण किया और सारे शहर को तहस नहस कर डाला।

पांचवीं शताब्दी के मध्य में अट्टिला के नेतृत्व में हूणों ने जबरदस्त आक्रमण किया। उन्होंने इटली और गॉल पर भी आक्रमण किया। जर्मन कबीलों (विसिगोथ और दूसरे कबीले) ने रोमनों को पराजित करने में उनका साथ दिया।

455 ई. में वैन्डलों ने रोम पर फिर से आक्रमण किया। 395 ई. से 476 ई. तक लगातार आक्रमण होते रहे और लड़ाइयां चलती रहीं। अन्ततः 476 ई. में रोमुलस अगस्तुलस (Romulus Augutulus) को अपदस्थ कर दिया गया और पश्चिमी रोमन साम्राज्य का अन्त

हो गया। यहां तक कि पूर्वी रोमन साम्राज्य भी बहुत कमजोर हो चुका था और उसके हाथ से कई इलाके निकल चुके थे। इससे बाइजेंटाइन साम्राज्य के नाम से जाना जानेवाला यह पूर्वी साम्राज्य बहुत कमजोर हो गया जो अपने आप को महान रोमन साम्राज्य का वैध उत्तराधिकारी होने का दावा करता था। हालांकि अपने नए स्वरूप में यह बिलकुल अलग था परंतु यहां अपेक्षाकृत स्थायित्व था और यह लम्बे समय तक कायम रहा। सड़कें तहस नहस कर दी गईं। अधिकांश संस्थाओं को पूर्णतः बदल दिया गया। पश्चिमी साम्राज्य के नियंत्रण वाले क्षेत्रों पर जर्मन कबीलों और पूर्ववर्ती रोमन साम्राज्य के कुछ सरदारों का आधिपत्य हो गया। विसिगोथों ने स्पेन, वैन्डल्स ने अफ्रीका, बरगुनडियनों ने दक्षिणी गॉल और अस्ट्रोगोथस ने इटली पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। बाइजेंटाइन सम्राट जस्टिनियन I (Justinian I) (527–63 ई.) ने इटली को जीतकर साम्राज्य को एक बार फिर वापस लाने और एकीकृत करने का प्रयास किया। परंतु यह प्रयास अस्थाई सिद्ध हुआ और इसमें ज्यादा सफलता नहीं मिली।

रोमन क्षेत्रों पर जर्मन कबीलों के आधिपत्य और शासन के फलस्वरूप पश्चिम में नई सामाजिक-आर्थिक संरचना कायम हुई। मौजूदा रोमन संस्थाएं और संरचनाएं पूरी तरह समाप्त नहीं की गईं। अधिकांश नागरिक और न्यायिक संस्थाएं काफी लम्बे समय तक नई संरचनाओं के साथ कायम रहीं। परंतु नए शासकों का सेना पर पूरी तरह नियंत्रण था।

17.4 रोमन राज्य

हमने पिछले भाग में बताया कि आगस्तस रोमन राज्य के तीनों घटकों – सम्राट, सेनेट कुलीनतंत्र और सेना – के बीच संतुलन बनाए रखने में सफल रहा। आगस्तस ने एक अलग नौकरशाही विकसित की जिसे सम्राट से अधिकार प्राप्त हुए थे और वह केवल उसी के प्रति जिम्मेदार था। उसने सचेत होकर गणतंत्र द्वारा स्थापित संस्थाओं और नौकरशाही व्यवस्था का इस्तेमाल किया और उन्हें सेनेट के जरिए नियुक्त कराया जो मात्र औपचारिकता थी और कुछ हद तक इससे उन्हें संतुष्टि भी मिलती थी। साम्राज्य के प्रसार की अपेक्षा उसे मजबूती प्रदान करना उसकी प्राथमिकता थी। राज्य की सत्ता अपने हाथों में केन्द्रित करने में उसे सफलता मिली। जूडियो-क्लाउडियन (Judio-claudian) राजवंश के पतन के बाद सेना ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया और वेसपैसियन (Vespasian) को सम्राट (68 ई.) बनाया। उसका राजवंश 96 ई. तक चला जिसे फ्लेवियन (Flavian) राजवंश के नाम से जाना जाता है (वेसपैसियन के पारिवारिक नाम फ्लेवियस के नाम पर)। फ्लेवियन्स राजवंश के पतन के बाद सेनेट ने नेरवा को सम्राट बनाया। जैसा कि पहले बताया जा चुका है 180 ई. में नेरवा ने उत्तराधिकारी का नाम देने की परम्परा शुरू की। इस दौरान रोमन क्षेत्रों के प्रसार के साथ-साथ संस्था के रूप में राजतंत्र भी मजबूत होता गया। दूसरी शताब्दी के अंत से सम्राट के चयन में सेना भी निर्णायक भूमिका निभाने लगी और वह सम्राट पर दबाव भी बनाने लगी। यह स्थिति लगभग अगले सौ वर्षों तक चलती रही। सेनेट और सेना के बीच का संबंध धीरे-धीरे कमजोर पड़ता गया और अन्त में टूट गया।

आगस्तस की मृत्यु के बाद रोम की स्थिति संक्षेप में इस प्रकार बयान की जा सकती है :

"जैसे-जैसे रोम राजतंत्र विकसित होता गया उसकी कुछ खास विशेषताएं सामने आने लगीं। तीसरी शताब्दी के मध्य तक रोमन राज्य सैद्धांतिक तौर पर एक गणतंत्र बना रहा। सम्राट को जनता का प्रतिनिधि माना जाता था और वह जनता की ओर से शासन करता था। परंतु व्यवहार में सम्राट का चयन कुलीनतंत्र के बीच से होता था। उत्तराधिकार का सिद्धांत बहुत कमजोर था और राजवंशीय उत्तराधिकार की घटनाएं काफी कम हो गईं।

राजतंत्र का स्वरूप अनिवार्यतः चयन आधारित था। एडवर्ड गिब्बन के अनुसार *(डेक्लाइन ऐंड फॉल ऑफ द रोमन एम्पायर)* 'सम्राट का चयन सेनेट किया करती थी और इसमें सैनिकों की भी मंजूरी ली जाती थी।' हालांकि आगस्तस की मृत्यु के बाद राजतंत्र की संस्था बनी रही और शताब्दियों तक मजबूत होती रही। परंतु अस्थायित्व ने इसका साथ नहीं छोड़ा। कई सम्राटों की हत्या की गई। कई सम्राट बहुत थोड़े समय के लिए गद्दी पर बैठे और उत्तराधिकार के लिए बार-बार लड़ाइयां होती रहीं।''

(अमर फारुकी, दिल्ली, 2001 पृ. 260–61)।

17.4.1 परवर्ती रोमन साम्राज्य में राजत्व

डायक्लीशन के शासनकाल के दौरान रोमन साम्राज्य अन्ततः दो हिस्सों में बंट गया। एक को पश्चिमी हिस्सा और दूसरे को पूर्वी हिस्सा कहा गया। इटली, गॉल, स्पेन और उत्तरी अफ्रीका पश्चिमी साम्राज्य के हिस्से बने और सीरिया, फिलिस्तीन, मिस्र, इराक और आधुनिक बालकन देश पूर्वी साम्राज्य के हिस्से बने। परवर्ती रोमन साम्राज्य का राजतंत्र पूर्वी प्रांतों में पूरी तरह अपनी जड़ें जमा चुका था। इस क्षेत्र में सम्राट पश्चिमी अभिजात वर्ग की चिंता किए बगैर बिना किसी बाधा के अपने अधिकार का उपयोग कर सकता था। डायक्लीशन ने अपना अधिकांश समय साम्राज्य के पूर्वी क्षेत्र में बिताया और उसने उत्तरी अनातोलिया में काले सागर के निकट निकोमेदिया शहर को अपनी राजधानी बनाया। मैक्सिमियन इटली का शासक था और अपने प्रशासन में सेनेट और सेना की दखलअंदाजी से बचने के लिए रोम की अपेक्षा मिलान में बसने का सही निर्णय लिया। अब सेनानायकों की गुटबंदी के बीच सम्राटों का निर्णय हुआ करता था। सेनेट एक दिखावे की संस्था मात्र रह गई। परवर्ती रोमन साम्राज्य में अधिकांश रोम सम्राट यूरोप के डैनुबियन-बालकन क्षेत्र से आए थे। इन पैन्नोनियन (Pannonian) या इल्लिरियन (Illyrian) शासकों के उदय का एक मुख्य कारण यह था कि सेना के जवानों की आपूर्ति में डैनुबियन और बालकन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह क्षेत्र सेना के पेशेवर सैनिकों और अधिकारियों का परम्परागत स्रोत बन गया था।

परवर्ती रोमन साम्राज्य में डायक्लीशन वह पहला सम्राट था जिसने राज्य को राजतंत्रीय व्यवस्था प्रदान की और डायक्लीशन की राजतंत्रीय व्यवस्था की परम्परा अगले सौ वर्षों तक कायम रही। आरंभ में रोमन साम्राज्य के सम्राटों ने शाही पदवी धारण नहीं की और न ही वे मुकुट या शाही शानो शौकत दिखाने के लिए भड़कीले वस्त्र पहना करते थे। डायक्लीशन ने अन्ततः गणतंत्र की परम्परा समाप्त कर दी और हेलेनेस्टिक सम्राटों की परम्परा की शुरुआत की। उसने स्वयं को दैवीय गुणों से सम्पन्न सम्राट कहा। उसने भव्य और आकर्षक शाही परिधान पहनना शुरू किया। उसने अपने सिर पर मुकुट रखना भी शुरू कर दिया। *डोमिनस इट डेअस* (दैवीय अधिपति और मालिक) की शाही पदवी भी धारण की। इतिहासकारों ने परवर्ती रोमन साम्राज्य को *डोमिनेट* (Dominate) कहकर भी संबोधित किया है। डायक्लीशन ने सम्राट के सम्मान और सत्ता को प्रदर्शित करने के लिए नए उत्सव भी आयोजित करने शुरू कर दिए। डायक्लीशन ने सैलोनी (Solonae) (आधुनिक युगोस्लाविया) में एक भव्य महल बनवाया जहां अवकाश प्राप्त करने के बाद वह रहने लगा। इस प्रकार उसने राजतंत्रीय परम्परा में भव्यता और प्रदर्शन का समावेश किया। सम्राट का महिमा गान और उसकी सैन्य क्षमताओं का गुणगान रोमन सम्राटों की स्थाई विशेषता बन गई। आम जनता को समय समय पर विभिन्न साधनों के जरिए राजा के अभियानों और विजयों की सूचना दी जाती थी। रोमन कवि पैब्लियस वर्जिलस मैरो (Pablius Vergilius Maro) (70–19 ई. पू.) ने अपनी कविता में इस परम्परा का गुणगान किया है। न केवल रोम में बल्कि साम्राज्य के अन्य सभी शहरों में विजय द्वार निर्मित किए

गए। सम्राटों की भव्य मूर्तियां बनाई गईं और उसमें उनके सम्मान में कसीदे भी लिखे गए।

17.4.2 कौन्सटैंटिनोपल में सेनेट

गणतंत्र और प्रिंसिपेट के युग में सेनेट एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्था थी। इसके सदस्यों का चुनाव रोम के पैट्रिशियनों में से किया जाता था और ये आजीवन इस संस्था के सदस्य होते थे। इन सदस्यों से मिलकर एक शासकीय कुलीनतंत्र का निर्माण हुआ। इस शासकीय कुलीनतंत्र ने रोमन गणतंत्र पर शासन किया और बाद में इसने रोमन साम्राज्य के सम्राटों का भी चयन करना शुरू कर दिया। इस प्रकार रोमन सम्राट के युगों में भी सेनेट रोमन गणतंत्र का प्रशासन चलाने वाली एक प्रशासनिक इकाई थी परंतु डायक्लीशन और कौन्सटैनटाइन I के शासनकाल में निरंकुश राजतंत्र के उदय के बाद यह एक दिखावटी राजनीतिक निकाय रह गया। हालांकि कौन्सटैंटिनोपल में कौन्सटैनटाइन ने एक समानांतर सेनेट की स्थापना की परंतु इस सेनेट की स्थापना पूर्व के प्रांतीय संभ्रांतों के सदस्यों को मिलाकर की गई। इसके पास कोई वैधानिक ताकत नहीं थी और यह पूरी तरह सम्राट के प्रति समर्पित थी। कौन्सटैंटिनोपल में इसकी नगरपालिकाई भूमिका प्रमुख थी।

17.4.3 सेना

आरंभ से ही सेना रोमन राज्य की एक महत्वपूर्ण घटक थी। रोमन साम्राज्य के विस्तार और सुरक्षा में रोमन सेना की महत्वपूर्ण भूमिका थी। सम्राट इसका प्रमुख सेनानायक हुआ करता था। सम्राटों के इस युग में रोमन राज्य अपने समय की सबसे ताकतवर सैन्य शक्ति बन गया। सीमाओं की रक्षा करने के लिए और गैर-रोमन संसार से रोमन साम्राज्य की रक्षा करने के लिए सीमाओं पर सेना भेजी जाती थी। वे खासतौर पर पूरब से आनेवाले पार्थियनों और राइन तथा डैन्युब से आनेवाले जर्मन कबीलों के खिलाफ अपनी सीमा की रक्षा किया करते थे। रोमन गणतंत्र के सैनिकों को लड़ाई के समय अपने घरों से दूर रहना पड़ता था और इस प्रकार उनके हाथ से उनके घर की सम्पत्ति भी छूट जाती थी। गणतंत्र के पतन के बाद सेनाध्यक्षों ने राजनीतिक लाभ के लिए सैनिकों का उपयोग करना शुरू कर दिया। प्रथम शताब्दी ई. से रोमन साम्राज्य के सम्राट के रूप में सेनाध्यक्षों को बिठाने में सेना महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगी। रोमन साम्राज्य के पहले रोमन सम्राट आगस्तस ने हजारों सैनिकों को जमीन आवंटित की। इन उपायों से सेना में अनुशासन और निष्ठा की भावना पैदा हुई और इससे सेना को स्थाई और पेशेवर सेना के रूप में ढालने में मदद मिली। परवर्ती रोमन साम्राज्य में सम्राट डायक्लीशन ने सेना के महत्व को समझा और सैन्य भरती की शुरुआत की। तीसरी और चौथी शताब्दी ई. में सैनिकों की कुल संख्या 450,000 थी। अब सैनिकों के पुत्रों को सेना में शामिल होना एक रिवाज बन गया। डायक्लीशन और कौन्सटैनटाइन ने यह आदेश दिया कि जिन सैनिकों के बेटे शारीरिक रूप से योग्य हैं उन्हें सेना में अवश्य भरती होना चाहिए और नई कर व्यवस्था के तहत भूमिपतियों को अपनी जमीन का एक हिस्सा कर के रूप में देना पड़ता था। तीसरी शताब्दी के आरंभ से आंतरिक सुरक्षा बहाल करने के लिए राजमार्गों के दोनों ओर सैनिक तैनात किए जाते थे और देहातों में सिपाही रखे जाते थे। इस प्रकार के पड़ावों की बढ़ती संख्या से इस बात की पुष्टि होती है कि इस क्षेत्र में सामाजिक असंतोष बढ़ने लगा था। रोमन अधिकारियों पर भी प्रांतीय नागरिकों के असंतोष को नियंत्रित करने के लिए दबाव डालने और उपयुक्त कदम उठाने के लिए तथा अन्य स्थानीय सामाजिक आंदोलनों को दबाने के लिए नए प्रशासनिक कदम उठाने को कहा गया। बड़ी संख्या में बर्बर स्वयंसेवियों को सेना में शामिल किया गया और इन बर्बर स्वयंसेवियों ने परवर्ती

साम्राज्य को कई संभ्रांत टुकड़ियां प्रदान कीं। अब अधिकांश उच्च सैनिक पद और नेतृत्व घुड़सवार सैनिकों को ही दिए जाते थे। इससे पहले सेना के उच्च अधिकारियों का चुनाव सेनेटोरियल कुलीनतंत्र से किया जाता था परंतु डायक्लीशन ने धीरे-धीरे बड़े नियोजित ढंग से सेनेटोरियल कुलीनतंत्र को न केवल सेना से बल्कि नागरिक प्रशासन से भी हटा दिया। इस प्रकार डायक्लीशन ने नागरिक प्रशासन तो बहाल कर दिया परंतु सत्ता की संरचना में एक दरार पड़ गई। भूमध्यसागर (पश्चिमी यूरोप और पश्चिम एशिया) का राजनीतिक एकीकरण प्रभावशाली वर्ग में एक सामाजिक दरार पैदा कर गया। कौन्सटैनटाइन I ने पश्चिम के परम्परागत कुलीनों के प्रति अपनी पूर्वजों की नीति को परिवर्तित कर दिया और उसमें से कुछ लोगों को प्रांतों का गवर्नर और प्रशासक बनाया। परंतु सेना से उन्हें पूरी तरह से हटा दिया गया। कौन्सटैनटाइन के धर्म परिवर्तन और मिलवियन ब्रिज के युद्ध में मैक्सेनटियस (Maxentius) की पराजय के बाद पूरे साम्राज्य में अभिजात वर्ग का चरित्र पूरी तरह बदल गया क्योंकि कौन्सटैनटाइन के शासनकाल में राज्य के ईसाईकरण से एक बड़ा संस्थागत परिवर्तन आया था। नव धर्मांतरित ईसाइयों को प्रशासन में महत्वपूर्ण पद दिए गए और इसका परवर्ती रोमन राज्य पर संस्थागत प्रभाव पड़ा। अधिकांश नव धर्मांतरित ईसाइयों की नियुक्ति पूर्वी क्षेत्र से हुई और इनमें से कई सदस्य कौन्सटैंटिनोपल में विकसित दूसरी सेनेट के सदस्य बने। ईसाई धर्म के रोमन साम्राज्य का सरकारी धर्म बनने के बाद राज्य का धर्म निरपेक्ष तानाबाना खतरे में पड़ गया। रोमन राज्य की धर्म निरपेक्ष नौकरशाही में धर्म से जुड़े लोग भी शामिल हो गए और धर्म से जुड़ी यह नौकरशाही धर्म निरपेक्ष नौकरशाही से अधिक ताकतवर बन गई।

सेना की बागडोर *मैजिस्टर इक्विटम* (magister equitum) के हाथों में थी और उनके नीचे *लिमिटैंसी* के *ड्यूसेस* और कैमिटैंस के *कौमिट्स* रहा करते थे। इन सबके पास सेना की कमान हुआ करती थी। वैलिटाइन I के शासनकाल में सैनिक जरूरतों को देखते हुए किले और सैनिक अड्डे बनाए गए।

कौन्सटैनटाइन के शासनकाल में सेना का विस्तार किया गया। उसने नई घुड़सवार और पैदल सेना की टुकड़ियां बनाईं। चौथी शताब्दी के अंत तक रोमन राज्य की सेना के सैनिकों की संख्या आरंभिक प्रिंसिपेट के समय से बढ़कर चारगुना से ज्यादा यानी लगभग 650,000 हो गई। इस प्रकार परवर्ती रोमन साम्राज्य एक शक्तिशाली राज्य था और इसके पास विशाल सैनिक, राजनीतिक और विचारधारात्मक अधिसंरचना थी।

17.4.4 नागरिक प्रशासन

परवर्ती साम्राज्य की नागरिक सेवा में नौकरशाहों का पदानुक्रम पिरामिडनुमा था। हर स्तर पर नौकरशाह का पद एक निर्धारित शैली और गरिमा से युक्त था। शासक पदाधिकारियों के मुखिया हुआ करते थे। पदाधिकारियों को मजिस्ट्रेट कहा जाता था और वे विभिन्न विभागों के अध्यक्ष भी हुआ करते थे। पदाधिकारियों को राजा के समक्ष खड़ा रहना पड़ता था। साम्राज्य के विभाजन के बाद प्रशासन में कई परिवर्तन किए गए। कौन्सटैंटिनोपल में दूसरी राजधानी स्थापित होने के बाद दो सेनेट बने और शहर के प्रिफेक्टर और सेनेट के प्रसिडेन्सी दो-दो पद बने। 396 ई. के बाद से दोनों सम्राट अधिकांश पदाधिकारियों की नियुक्ति अलग-अलग करने लगे। प्रत्येक मेट्रोपोलिस की अपनी पुलिस, अनाज आपूर्ति व्यवस्था और न्यायिक व्यवस्था होती थी, और प्रत्येक के अलग-अलग प्रैक्टर (प्रत्येक वर्ष चुने जाने .ले मैजिस्ट्रेट) और क्वेस्टर (खजांची या राज्य कोषाध्यक्ष जैसे पदों पर काम करने वाले मैजिस्ट्रेट) होते थे।

परवर्ती रोमन साम्राज्य में दूर-दराज के इलाकों में कानून और व्यवस्था बनाए रखने में प्रांतीय प्रशासन की अहम भूमिका थी। सेनेट की ताकत समाप्त होने के बाद सेनेटोरियल प्रांत लुप्त हो गए और उनका प्रशासन सम्राट के हाथों में आ गया। डायक्लीशन ने प्रांतीय प्रशासन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए और सम्पूर्ण साम्राज्य को सौ प्रांतों में विभक्त कर दिया। पदाधिकारियों की संख्या बढ़ाई गई और वे साम्राज्य के कुशल अधिकारी बना दिए गए। सीमा की रक्षा पुख्ता की गई। डायक्लीशन ने कई प्रांतों को एक प्रांत में मिला दिया और उस पर एक प्रशासक और एक सेनाध्यक्ष का नियंत्रण स्थापित कर दिया। चौथी शताब्दी में पूर्व, पोंटस (Pontus), एशिया, थ्रेस (Thrace), मोसिया (Moesia), पैनोनिया (Pannonia), इटली, अफ्रीका, स्पेन, वियेनेनसिस (Viennensis), गैलिया (Gallia), और ब्रिटेन महत्वपूर्ण प्रांत थे। परवर्ती साम्राज्य में प्रांतों का प्रशासन राज्याध्यक्षों यानी गवर्नरों के हाथ में था।

17.4.5 न्यायिक व्यवस्था

दीवानी कानून रोमन साम्राज्यी राज्य का आधार था। आगस्तस ने राज्यों में कुछ प्रमुख न्यायविदों को अपना सलाहकार बनाकर सरकारी ओहदा प्रदान किया और कानून की व्याख्या के अनुसार शाही अधिकार दिए। इसी समय से रोमन न्यायाधिपतियों को राज्य में प्रमुख पद प्राप्त होने लगे थे। दूसरी ओर सम्राट राजाज्ञाओं से कानून बनाया करते थे और नए कानून बनाकर परम्परागत कानून में सुधार किया जाता था। निरंकुश सार्वजनिक कानून गणतंत्र के कानून से ज्यादा जटिल और संश्लिष्ट हो गया। परवर्ती रोमन साम्राज्यी राज्य में सम्राट की इच्छा ही कानून बन गई। डायक्लीशन के नेतृत्व में न्याय संबंधी सारे कार्य सम्राट के नाम पर किए जाते थे और प्रांतों में *प्राएसाइड्स* (*Praesides*) और राजधानी शहरों में *प्राएफेएक्टस उरबी* (*Maefectus*) नामक अधिकारी राजा के नाम पर न्याय प्रदान करने का कार्य किया करते थे।

दीवानी कानून आरंभ से ही अमीर वर्गों के हितों की रक्षा किया करते थे और इन वर्गों के सम्पत्तिगत अधिकारों को सुरक्षित रखने में मदद करते थे। फौजदारी कानून निम्न वर्गों को लक्ष्य करके बनाया गया था और यह शासकीय वर्ग के लिए एक सामाजिक कवच तथा निम्न वर्ग के लिए निरंकुश और दमनात्मक था। कौन्सटैनटाइन के शासनकाल में फौजदारी कानून जरूरत से ज्यादा सख्त बना दिया गया था। रोमन शासकीय वर्गों ने कई ईसाई सम्प्रदायों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए कई फौजदारी कानून बनाए और इन सम्प्रदायों को विधर्मी सम्प्रदाय घोषित किया गया। इन खामियों के बावजूद तीसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य की दीवानी न्याय व्यवस्था काफी सुव्यवस्थित थी लेकिन छठी शताब्दी में जाकर सम्राट जस्टिनियन (Justinian) के शासन काल में न्याय संहिता निर्मित की गई। उसका कौरपस जुरिस सिविलिस (दीवानी कानूनों का निकाय) कानूनी व्यवस्था का आधार बना बाद में जिसका पूरे यूरोप में अनुकरण किया गया।

17.5 परवर्ती रोमन राज्य की अर्थव्यवस्था

चौथी शताब्दी में रोमन राज्य के पुनर्गठन से शहरी विकास में अस्थाई वृद्धि हुई और सोने के सिक्कों को जारी किए जाने के साथ मुद्रा संबंधी स्थायित्व कायम हुआ परंतु दोनों ही उपलब्धियां सीमित रहीं। शहरों का विकास मुख्य रूप से नए सैनिक और प्रशासनिक केन्द्रों तक ही सीमित रहा। इसे सम्राटों का संरक्षण प्राप्त था और मिलान, सारदिका (Sardica) और सबसे प्रमुख कौन्सटैंटिनोपल परवर्ती रोमन साम्राज्य का प्रमुख शहरी केन्द्र बने। पैरी एन्डरसन के अनुसार परवर्ती रोमन साम्राज्य के सभी प्रांतों में शनैः शनैः शहरी व्यापार और उद्योग कम होता चला गया। सम्राट का साम्राज्य धीरे-धीरे देहातीकरण की ओर बढ़ता गया। परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में भी नए परिवर्तन हो रहे थे और उत्पादन के

नए तरीके विकसित हो रहे थे। प्राचीन काल में उत्पादन में दासों की सहायता ली जाती थी और राजनीतिक व्यवस्था तथा सैनिक विस्तार से भी इसका अन्तरसंबंध था। परवर्ती रोमन साम्राज्य में अब साम्राज्यी सीमाओं का विस्तार रूक गया था। इसलिए भूमिपतियों ने अपने दासों को काश्तकार बना दिया। छोटे काश्तकारों और मुक्त काश्तकारों के गांव की स्वतंत्र प्रकृति नष्ट हो गई और उनका स्थान भूमिपतियों ने ले लिया। वे राज्य के आर्थिक शोषण और दोहन के खिलाफ उनकी रक्षा करते थे और इस प्रकार उनकी आर्थिक स्थिति पूर्व-दासों की तरह हो गई। इस प्रकार दूसरी शताब्दी ई. से स्वतंत्र किसानों की स्वतंत्र सत्ता समाप्त हो गई और उन्हें भूस्वामियों की भूसम्पतियों से बांध दिया गया। डायक्लीशन से लेकर वैलेंस (Valens) और अर्काशियस (Arcachius) तक परवर्ती रोमन साम्राज्य के सभ्रांतों ने कर वसूलने के उद्देश्य से काश्तकारों को उनके गांवों के साथ जोड़ दिया। इसके बाद चौथी और पांचवीं शताब्दी में आश्रित काश्तकारों (Coloni) पर भूमिपतियों की न्यायिक शक्ति में वृद्धि हुई। इन बदलावों से दास प्रथा बिलकुल समाप्त नहीं हुई और परवर्ती रोमन साम्राज्य में राज्य की सरंचना दास प्रथा पर ही आधारित रही और पश्चिम में साम्राज्य के अन्त तक यह प्रथा जारी रही। शहरी शिल्प उत्पादन में दासों की भूमिका कम होने लगी परंतु वे अभी भी पैट्रिशियनों के घरों में कामकाज किया करते थे। इटली, स्पेन और गॉल में अपने लैटिफुंडिया में भूमिपति दासों से ही काम कराया करते थे। परवर्ती रोमन साम्राज्य की सम्पूर्ण आर्थिक व्यवस्था आश्रित ग्रामीण उत्पादक, भूमिपति और राज्य के परस्पर संबंधों पर आधारित थी परवर्ती रोमन साम्राज्य में सेना और नौकरशाहीतंत्र का तेजी से विकास हुआ और परवर्ती रोमन राज्य में बृहद् राजतंत्र की जरूरतों को पूरा करने के लिए कई प्रकार के कर लगाए गए। कर के रूप में नागरिकों से मुफ्त सैनिक सेवा प्राप्त की जाती थी और उन्हें अपने हथियार भी खुद ही जुटाने पड़ते थे। मार्क्स के अनुसार "युद्धों के जरिए रोमन पैट्रिशियनों ने प्लेबियनों को सैनिक के रूप में काम करने के लिए मजबूर कर उन्हें धीरे-धीरे नष्ट कर दिया और उन्हें कंगाल बना दिया।" आम जनता को राज्य के लिए दूसरे प्रकार की अनिवार्य सेवाएं भी करनी पड़ती थीं। इस प्रकार की सेवाओं को *अंगरिया* (*angaria*) के नाम से जाना जाता था। इन सेवाओं से माल ढोने, इमारतें बनाने और सड़क बनाने के लिए लोगों से बेगार करवाया जाता था।

परवर्ती साम्राज्य में कर बढ़ाने की नीति को रोमन राज्य ने जारी रखा। यह नीति पूर्व में सफल रही परंतु पश्चिम में इसके कारण संकट पैदा हो गया। पश्चिमी अभिजात वर्ग लगातार करों में अपना हिस्सा बढ़ाता रहा और इस प्रकार किसानों, कोलोनि (आश्रित काश्तकारों), शिल्पकारों और छोटे व्यापारियों पर कर का बोझ बढ़ता गया। कृषि उत्पादन, शिल्प उत्पादन और व्यापार पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा। राज्य ने *डेकुरिओनस* (*decuriones*) और *कुरिअलेस* (*curiales*) नामक कर समाहर्ताओं की नियुक्ति की। *कुरिअलेस* अनुवांशिक कर समाहर्ता बन गए और उनमें से अधिकांश अनुपस्थित भूमिपति थे। उन्हें राज्य के लिए किसानों, शिल्पियों और व्यापारियों से कर वसूलना होता था। *कुरिअलेस* और भूमिपति आपस में मिलकर राज्य कर की चोरी करते थे। यहां तक कि तीसरी शताब्दी में भी कर की चोरी होती थी। डायक्लीशन ने *कुरिअलेस* के इन भ्रष्टाचारों को रोकने के लिए कानूनी प्रावधान बनाए। परवर्ती रोमन साम्राज्य में डायक्लीशन और उसके परवर्ती अधिकारियों ने कर व्यवस्था को सुनियोजित किया परंतु वे इसे साम्राज्य के पूर्वी भाग में सफलतापूर्वक लागू नहीं कर सके। इस समय तक पश्चिमी कुलीनतंत्र ने सम्राटों को समर्थन देना बंद कर दिया था और साम्राज्य के पश्चिमी हिस्से में *कुरिअलेस* के जरिए कर वसुलना राज्य के लिए कठिन कार्य हो गया था। अब सम्राट के चयन में पश्चिमी कुलीनतंत्र की कोई भूमिका नहीं रह गई थी और रोम शहर का प्रशासनिक महत्व समाप्त हो गया था। पश्चिमी शासकीय वर्ग ने न केवल शाही कर देने

से इनकार कर दिया था बल्कि वे शाही कर व्यवस्था से किसानों की रक्षा भी करने लगे थे। इसके परिणामस्वरूप राज्य के लिए साम्राज्य के पश्चिमी हिस्से के भूमिपति वर्गों से नियमित रूप से कर वसूलना और भी मुश्किल हो गया। इससे पश्चिम में साम्राज्य के विखंडन की प्रक्रिया में तेजी आ गई।

17.6 सामाजिक संरचना

डायक्लीशन और कौन्सटैनटाइन के शासनकाल में रोमन समाज में कई सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लक्षित किए जा सकते हैं। इस दौरान कृषि उत्पादन के लिए कोलोनेट (बंधुआ मजदूरों जैसी एक व्यवस्था) प्रथा का जन्म हुआ जिसने कुछ हद तक दास प्रथा का स्थान ले लिया। तात्पर्य यह है कि इस दौरान ऐसे आत्मनिर्भर 'इस्टेट्स' (भूसम्पदाओं) का जन्म हुआ जहां अपने मालिक पर आश्रित अर्ध-दास काम किया करते थे। उन्हें अपने लैटिफुंडिया को नजराना और कर देना पड़ता था परंतु यह व्यवस्था बाजार आधारित मुद्रा अर्थव्यवस्था से बिलकुल स्वतंत्र थी। शोषण के इस नए ढंग और संगठन के उदय से कई सामाजिक तनाव, विद्रोह और जन आंदोलन विकसित हुए। डायक्लीशन ने इन परिस्थितियों को देखते हुए और अपने साम्राज्य, क्षेत्र और अपनी सेना को कायम रखने के लिए नए तरीके इजाद किए।

17.6.1 उच्च वर्ग

परवर्ती रोमन साम्राज्य के समृद्ध वर्ग को इक्वेस्ट्रियन वर्ग के नाम से जाना जाता था। इस वर्ग के लोग केवल इटली में ही नहीं बल्कि व्यापारिक कारणों से प्रांतीय शहरों में भी बसे हुए थे और अपने शहरों में मजिस्ट्रेट और धार्मिक पदों पर काबिज थे तथा इनमें से कुछ लोग सेनानायक भी बने। राज्य के लिए बेहतर काम करनेवाले व्यक्तियों को रोमन नागरिकता प्रदान करने और इक्वेस्ट्रियन (घुड़सवार) का दर्जा दिए जाने का रिवाज चल पड़ा। परवर्ती रोमन साम्राज्य में इक्वेस्ट्रियन सम्राटों के प्रति निष्ठावान हुआ करते थे और सम्राट उन्हें प्रमुख नागरिक प्रशासन और सेना के पदों पर नियुक्ति किया करते थे। धनी प्लेबियनों और दासता से आजाद पुरुषों ने इक्वेस्ट्रियन का दर्जा प्राप्त करने का प्रयत्न किया या फिर उन्होंने इक्वेस्ट्रियन पद के समानांतर इस प्रकार के अधिकार और प्रतीक चिह्न अर्जित करने का प्रयास किया जैसे कि 'सोने की अंगूठी का प्रयोग'। ऊंची सामाजिक हैसियत वाले अन्य सामाजिक समूह भी थे परंतु उन्हें इक्वेस्ट्रियन की सदस्यता नहीं प्राप्त थी। भूमिपति, दुकानदार, उद्यमी, व्यापारी और उच्च पदस्थ कर्मचारी इसमें शामिल थे। वे रोम, इटली के अन्य शहरों और प्रांतीय शहरों में रहा करते थे।

चौथी शताब्दी के मध्य से लेकर छठी शताब्दी के अंत तक उच्च वर्ग के अधिकारों और प्राधिकारों में कई प्रकार के बदलाव देखे गए। उच्च पदस्थ नौकरशाह एक नए अनुवांशिक अभिजात वर्ग के रूप में उभरे। पूर्व में यह प्रवृत्ति ज्यादा उभर कर सामने आई। कौन्सटैंटिनोपल के सेनेट में चौथी शताब्दी के अन्त तक 2000 ऐसे परिवार शामिल थे जिन्होंने अपने पिता से अनुवांशिक रूप में इसे प्राप्त किया था। विशप और पुजारियों का एक नया धार्मिक वर्ग भी पैदा हुआ जिनके पास व्यापक भूसम्पत्ति थी और चर्च पर उनका पूरा अधिकार था।

17.6.2 निम्न वर्ग और दास प्रथा

उच्च वर्ग की सेवा करनेवाले लोग निम्न वर्ग से आते थे। इसमें कृषक सबसे बड़ा वर्ग था। कुम्हार, शिक्षक, बाजीगर और वेश्याएं भी इसमें शामिल थीं। स्वतंत्र मजदूरों की

संख्या भी काफी थी। इमारत बनाने या हाथ से काम करने के लिए उन्हें मजदूरी देकर रखा जाता था। जैसे-जैसे उच्च वर्ग का विस्तार होता गया वैसे-वैसे करों की मात्रा भी बढ़ती गई और इसका सबसे ज्यादा बोझ किसानों पर पड़ा। किसान सेना, चर्च और शहरों में मजदूर के रूप में काम करने के लिए भागने लगे। इससे खेतों में मजदूरों की बड़ी कमी हो गई।

नानबाइयों (बेकर), सुनार और ऊन का काम करने वाले जैसे कुछ कुशल कामगार भी थे। ये शिल्प संघ या *कौलेजिया* से संबद्ध होते थे जिसके कुछ सामाजिक, धार्मिक और कुछ अर्ध-राजनैतिक कार्य भी होते थे और ये संबद्ध व्यवसाय को एक संगठन भी प्रदान करते थे। शहरों में व्यापार श्रेणियां भी कायम थीं।

परवर्ती रोमन साम्राज्य में साम्राज्य की आर्थिक स्थिति खराब होने और सरकार के अधिक निरंकुश होने से निम्न वर्ग के जीवन में बदलाव आया। परवर्ती रोमन सम्राटों ने कई उद्यमों में अनुवांशिक व्यवस्था बहाल की। समाज को व्यवस्थित करने के लिए हर क्षेत्र में यह व्यवस्था की गई। प्रत्येक पेशे को जिंदा रखने के लिए पिता से पुत्र को जातिगत सदस्यता दी जाने लगी। सेना और नागरिक प्रशासन में भी यही प्रथा चल पड़ी।

रोमन गणतंत्र के साथ-साथ रोमन साम्राज्य के काल में भी दास एक महत्वपूर्ण सामाजिक वर्ग था। द्वितीय शताब्दी ई. पू. में यूनान, मक्दूनिया और प्यूनिक में हुए सामूहिक युद्धों के फलस्वरूप दास व्यापार को बढ़ावा मिला और दास मज़ूदर काफी सस्ते हो गए। उनकी संख्या में बड़ी तेजी से वृद्धि हुई और इटली, स्पेन, गॉल और अफ्रीका के प्रांतों के लैटिफुंडिया में उन्हें काम पर लगाया गया। दासों की कड़ी मेहनत से पैदा किए गए कृषीय उत्पादन के अधिशेष को रोमन अभिजात वर्ग द्वारा हड़प लिया जाता था इस प्रकार वे अमीर होते चले गए। रोमन कानून में दासों को सम्पत्ति माना गया। रोमन कानून में दासों को किसी प्रकार की सुरक्षा प्रदान नहीं की गई और मालिक का अपने दासों पर पूरा अधिकार होता था। रोमन साम्राज्य में पशुओं की भांति दासों की खरीद बिक्री की जाती थी और वे एक सामान की तरह थे (देखिए इकाई 13)। यहां तक कि परवर्ती साम्राज्य में भी राज्य का सारा काम काज दास मजदूरों पर ही निर्भर था। साम्राज्य के पश्चिम और पूर्वी भागों में दास धनी वर्ग के घरों में काम किया करते थे। इटली, स्पेन, और गॉल में वे ज्यादातर देहातों में ही कायम रहे। उन्होंने प्रांतीय भूमिपतियों के *लैटिफुंडिया* में कड़ी मेहनत की परंतु तीसरी शताब्दी से दासों द्वारा कराए जा रहे उत्पादन के तरीके में दरार पड़ी।

परवर्ती रोमन साम्राज्य में देहातों में दो तरह के परिवर्तन हुए। सबसे पहली बात यह कि दासों को रखना या उनका रखरखाव मुश्किल होता चला गया क्योंकि दासों की आपूर्ति में कमी होने के कारण वे महंगे होते चले गए। इनकी आपूर्ति का संबंध युद्ध से था और तीसरी-चौथी शताब्दी में साम्राज्य का विस्तार रूक गया था। उनकी आबादी भी बहुत नहीं बढ़ पाती थी क्योंकि दास दयनीय स्थिति में रहा करते थे।

अब दास अपने मालिकों की भूसम्पदाओं पर स्थाई रूप से बस गए थे और उन्हें अपने जीवनयापन के लिए छोटा जमीन का टुकड़ा दे दिया जाता था। यह रोमन कानून के मुताबिक ही था जिसके कानून के प्रावधान के अनुसार दासों के पास अपनी कुछ सम्पत्ति भी होनी चाहिए थी जिसे *पेकुलिअम* (peculium) कहते थे। *पेकुलिअम* से प्राप्त धन का उपयोग वे अन्य आर्थिक गतिविधियों में भी कर सकते थे। भूमिपतियों ने इन दासों द्वारा की गई उपज का अधिशेष भी वसूलना शुरू कर दिया। दूसरी तरफ, साथ ही साथ गांव में छोटे किसान और मुक्त किसान भी थे जो खेती का काम किया करते थे। ये किसान

राज्य के शोषण से बचने के लिए बड़े भूमिपतियों की शरण में चले जाते थे। धीरे-धीरे उनकी आर्थिक स्थिति भी दासों की तरह ही हो गई। दूसरी शताब्दी ई. से कोलोनि (coloni) की एक नई कोटि अस्तित्व में आई। वे मूलतः काश्तकार किसान थे और यह उन मुक्त काश्तकार किसानों पर भी लागू होता था जिनके पास अपनी जमीन नहीं थी, उनके साधन सीमित थे, उनके भूमिपति उन्हें बीज और उपकरण मुहैया कराते थे और इसके बदले में कोलोनि अपने मालिकों को अपनी उपज का एक हिस्सा देते थे। रोमन और इतालवी कोलोनियों को कोलोनस (कोलोनि का बहुवचन) के नाम से भी जाना जाता था। डायक्लीशन ने इस प्रथा को व्यवस्थित किया और उनके एक जगह से दूसरी जगह जाने पर प्रतिबंध लगा दिया। कौन्सटैनटाइन के शासनकाल में नए नियम बनाए गए और कोलोनि को स्थाई रूप से खेत से जोड़ दिया गया। इस प्रावधान के अनुसार अगर भूमि किसी दूसरे के स्वामित्व में चली जाती थी तो उसके साथ कोलोनि भी दूसरे के अधीन हो जाते थे। अतः अब कोलोनि मुक्त काश्तकार नहीं रह गए जो दूसरे खेतों में भी जाकर काम कर सकते थे (अमर फारूकी, 2001, पृ. 294–95)। इसके कारण कोलोनेट का उदय हुआ और साथ ही साथ *लैटिफुंडिया* का पतन हुआ।

प्रिंसिपेट के कोलोनस ऐसे काश्तकार थे जो करार समाप्त होने के बाद दूसरे खेतों में भी जाकर काम कर सकते थे परंतु अब अनुवांशिक अनुबंध के द्वारा उन्हें एक भूमि से बांध दिया गया और परवर्ती साम्राज्य में उनकी स्थिति कृषि दास जैसी हो गई। 332 ई. में कौन्सटैनटाइन ने घोषणा की कि "यदि किसी व्यक्ति के पास रहनेवाला कोलोनस दूसरे व्यक्ति के पास चला जाता है तो यह दूसरे व्यक्ति का कर्तव्य होता है कि वह उसे पहले व्यक्ति के पास लौटा दे परंतु उसे इस अवधि का पोल टैक्स उसे देना पड़ेगा। यदि कोलोनि खेत छोड़कर भागने की कोशिश करे तो उन्हें दासों की तरह कैद कर लेना चाहिए और उन्हें इतना सख्त दंड देना चाहिए कि फिर दुबारा वे भागने की कोशिश न करें।" 364 ई. में इस अनुबंध की अनुवांशिक प्रवृत्ति को कानून में ढाल दिया गया। इस कानून के अनुसार "दास और कोलोनि और उनके पुत्र और पौत्र जो साम्राज्यी भूसम्पदाओं को छोड़कर और वहां से भागकर सेना या असैनिक सेवाओं में शामिल हो गए थे उन्हें वापस बुला लिया जाए।" परवर्ती रोमन समाज और राज्य में हुई इन गतिविधियों से यह पता चलता है कि किसानों और काश्तकारों की आजादी समाप्त हो गई और मध्ययुगीन यूरोप में कृषि दास प्रथा की शुरुआत हुई।

परंतु दास प्रथा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई। परवर्ती रोमन समाज और लैटिफुंडिया के कुछ क्षेत्रों में यह प्रथा जारी रही। यहां तक कि पांचवीं शताब्दी ई. में भी कई भूमिपति हजारों दासों के मालिक थे। दासों को घरेलू कार्यों, खनन और समाज तथा राज्य के निचले स्तर के कामों में लगाया जाता था।

तीसरी शताब्दी ई. के बाद से बर्बर कबीले रोमन इलाकों पर आक्रमण करने लगे और चौथी शताब्दी में वे इन इलाकों में जम गए। उत्तर में जर्मन कबीले, उत्तर-पूर्व में खानाबदोश, एशियाई कबीले, दक्षिण में अरब या सेमेटिक मूल के कबीले आकर साम्राज्य के पड़ोस में बस गए। वे रोमन जीवन पद्धति और समाज से परिचित हो गए और यहां तक कि वे रोमन समाज के सदस्य भी बन गए। इन विभिन्न कबीलों ने न केवल राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं के संबंध में नए विचार प्रस्तुत किए बल्कि रोमन साम्राज्य में उनका प्रचलन भी शुरू करवाया। इस प्रकार चौथी और सातवीं शताब्दी के बीच भूमध्यसागरीय क्षेत्र के इतिहास में संकट और उठापठक तथा उथल-पुथल मची रही जिससे अन्ततः यहां का इतिहास निर्धारित हुआ।

17.7 परवर्ती रोमन साम्राज्य में धर्म

आरंभ से ही रोमन साम्राज्य में विभिन्न पंथों और सम्प्रदायों के प्रति संहिष्णु रहने की परम्परा थी। विवेच्य काल में रोमन यहूदी धर्म और ईसाई धर्म से परिचित हुए। आरंभिक वैमनस्य और प्रतिरोध के बाद अन्ततः पूरे रोमन संसार में ईसाई धर्म को व्यापक तौर पर स्वीकार कर लिया गया। इस भाग में हम रोमन साम्राज्य की विभिन्न परम्पराओं और ईसाई धर्म के प्रसार पर विचार विमर्श करेंगे।

17.7.1 आरंभिक धार्मिक सम्प्रदाय

रोमन गणतंत्र के समय रोमन संभ्रांत वर्ग के लोग और आम जनता कई देवी-देवताओं की पूजा किया करते थे। बृहस्पति रोम शहर का देवाधिपति था। मंगल भी एक महत्वपूर्ण देवता था क्योंकि उसे युद्ध का देवता माना जाता था। रोमन साम्राज्य में धर्म रोमन राज्य का अंतरंग भाग था और यह ऐसा धर्म था जहां अनेक देवताओं की पूजा की जाती थी। साम्राज्य के सभी हिस्सों में खासतौर पर पश्चिम में जनता अलग-अलग धार्मिक पंथों की अनुयायी थी। कुछ ने अपना मौलिक नाम और प्रथाएं बचाकर रखीं थीं और कुछ दूसरे पंथों और सम्प्रदायों में मिल गई थीं। हालांकि कुछ प्राचीन पूजा स्थल बचे हुए थे और भक्तगण वहां पूजा अर्चना किया करते थे। फ्रांस, इटली, ब्रिटेन और स्पेन में कई स्थानीय देवी-देवताओं की पूजा की जाती थी। मंगल ओर अपोलो को भी कई प्राचीन नामों से पूजा जाता था। टेउटेट्स (Teutates), कैटुरिक्स (Caturix), दुनाटिस (Dunatis), रिगिसैमस (Rigisamus) सब मंगल के पर्याय थे। रोमन साम्राज्य के अन्य हिस्सों यूनान, अनातोलियाई समुदाय और आम सीरियावासी, मेसोपोटामियावासी, मिस्रवासी और परवर्ती अफ्रीकावासियों के अपने देवी-देवता थे। ब्रिटेन और गॉल में ड्रइडिज्म (Druidism) बहुत लोकप्रिय था। यह एक कबीलाई धर्म था। इस धर्म में प्रकृति की शक्तियों की पूजा की जाती थी। परंतु रोमनों ने प्रथम शताब्दी ई. के मध्य में निर्ममतापूर्वक ड्रइडिज्म को कुचल दिया। वोडेन (Woden) और थौर (Thor) जर्मन कबीलाओं के देवता थे।

रोमन राज्य धर्म का आयोजन और संयोजन *पोन्टिफेक्स* (Pontifex) के द्वारा होता था। *पोन्टिफेक्स* को पुजारी या पुरोहित कहा करते थे। गणतंत्र के आरंभ में प्लेबियन समुदाय में से *पोन्टिफेक्स* का चुनाव होता था और वह राज्य के सभी धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न कराता था। बाद में उसे *पोन्टिफेक्स मैक्सिमस* यानी मुख्य पुजारी कहा जाने लगा। वह रोमन राज्य धर्म का मुखिया था और शक्तिशाली राजनीतिक और धार्मिक पदाधिकारी था। आगस्तस वह पहला रोमन सम्राट था जिसने खुद को *पोन्टिफेक्स मैक्सिमस* घोषित किया और बाद में अन्य रोमन सम्राटों ने भी यह पद्वी धारण की।

रोमनों के प्रमुख धर्म को ही रोमन साम्राज्य की समस्त जनता का एकमात्र धर्म नहीं समझ लेना चाहिए। पूर्वी क्षेत्र में कई पंथों का प्रवेश और विस्तार हुआ। साम्राज्य के विस्तार के क्रम में यह साम्राज्य के प्रमुख क्षेत्रों में प्रविष्ट हुए और सैनिकों, व्यापारियों और दासों के जरिए से साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों में फैलते चले गए।

एटागार्टिस (Atagartis), साइबल (Cybele) और सेरापिस (Serapis) साम्राज्य के पूर्वी हिस्से के प्रमुख पंथ थे। इन पंथों का जन्म क्रमशः सीरिया, अनातोलिया और मिस्र में हुआ था। एटागार्टिस सीरिया की प्रमुख देवी थी। सीरिया में तैनात रोमन सैनिक एटागार्टिस देवी की पूजा करते थे। ये सैनिक अपनी रक्षा के लिए प्रतिदिन इस देवी की पूजा किया करते थे। सीरिया से बाहर आने के बाद इस देवी की पूजा करने की परम्परा भी वे साथ लाए और सारे साम्राज्य में इसे फैला दिया।

साइबल अनातोलिया का एक लोकपंथ था और इसका संबंध मातृदेवी साइबल से था। साइबल वह प्रथम पंथ था जिसे रोमन धर्म का हिस्सा बनाया गया। इसे दूसरे प्यूनिक युद्ध (218–201 ई. पू.) के दौरान अपनाया गया था। इस पंथ में बैलों की बलि चढ़ाई जाती थी। यह उस समय से रोमन साम्राज्य में कई रूपों में लोकप्रिय था जब रोमन साम्राज्य में एशियाई हिस्सा मिलाया गया था। इसी प्रकार के एक पंथ का उदय ईरान में हुआ जिसे मिथरास (Mithras) के नाम से जाना गया। मिथरास पंथ पॉम्पी (Pompey) सम्राटों के शासनकाल में रोम में प्रविष्ट हुआ। मिथरास प्रकाश और सूर्य का देवता था। इस पंथ के अनुसार यह ब्रह्मांड दो विरोधी दैविक शक्तियों से संचालित होता है। एक अच्छाई का तो दूसरा बुराई या अंधकार का प्रतीक है। इसे द्वैधवाद का दर्शन कहा जाता था। लोगों को अच्छाई का पक्ष लेने की सलाह दी जाती थी। साम्राज्य के पूर्वी क्षेत्रों में तैनात रोमन सैनिक इसी पंथ का पालन किया करते थे। रोमन साम्राज्य के पश्चिम एशिया के क्षेत्र में रहने वाले रोमनों के बीच भी यह पंथ बहुत लोकप्रिय था। इस पंथ के पूजा स्थल को मिथराकम (Mithracums) कहा जाता था जो पूरे साम्राज्य में स्थापित हो चुके थे।

17.7.2 यहूदी धर्म

यहूदी धर्म और ईसाई धर्म का जन्म पश्चिम एशिया में एक ही क्षेत्र में हुआ था जिसे आज फिलिस्तीन और इजरायल के नाम से जानते हैं। ईसाई धर्म के उदय से पहले जूडावाद (Judaism) (इसके अनुयाइयों को यहूदी कहा जाता था) इस क्षेत्र का प्रमुख धर्म था और यहूदी धर्म ने ही ईसाई धर्म के लिए ऊर्वर भूमि प्रदान की। चौथी शताब्दी ई. में ईसाई धर्म रोमन साम्राज्य का एक प्रमुख धर्म बना। रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म के उदय और प्रसार के कारणों की चर्चा करने से पहले हम आपको यहूदी धर्म की संक्षिप्त जानकारी दे देना चाहते हैं। यहूदी धर्म दुनिया का एक बहुत पुराना धर्म है। *बुक ऑफ जेनेसिस* (आरंभ की पुस्तक) में इसके जन्म की कहानी मिलती है। यह पुस्तक बाइबिल के ओल्ड टेस्टामेंट का एक हिस्सा है। यहूदी धर्म पश्चिम एशिया में पश्चिमी सेमेटिक कबीलों के आंदोलन से शुरू हुआ था। अब्राहम के नेतृत्व में कबीलों के स्थानांतरण के दौरान यहूदी धर्म की स्थापना की गई थी। ये लोग मेसोपोटामिया से सीरिया-फिलिस्तीन आए थे और इन्हें इजरायली के नाम से जाना जाता था। ये याहवेह नामक ईश्वर में आस्था रखते थे और इसे ही एकमात्र सत्य मानते थे। ऐसी मान्यता है कि अब्राहम ने याहवेह (Yahweh) के साथ यह समझौता किया कि मूर्तियों और सभी देवी-देवताओं की पूजा अब से नहीं की जाएगी। यह 1800 ई. पू. के आसपास का समय था। आठवीं शताब्दी ई. पू. तक यहूदी धर्म पश्चिम एशिया का एक एकेश्वरवादात्मक धर्म था और इसके भक्तों की संख्या भी काफी थी। वे एकमात्र सर्वोच्च ईश्वर याहवेह में आस्था रखते थे, उन्हीं की पूजा की जाती थी और यहूदी धर्म में मूर्ति पूजा के लिए कोई स्थान नहीं था।

उनका यह दृढ़ विश्वास था कि हिब्रू (Hebrew) धर्म या यहूदी धर्म पैगम्बरों की एक लम्बी परम्परा का हिस्सा है जिन्होंने यहूदी धर्म की नैतिकताओं और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी थी। *तोराह* (Torah) उनका धार्मिक ग्रंथ था। 63 ई. पू. में रोमन शासक पौम्पी ने सीरिया के सेल्यूसिड शासक एन्टिओक III (Antioch III) को परास्त किया और फिलिस्तीन सहित सीरिया को रोमन साम्राज्य का एक हिस्सा बना लिया जिसका मुख्यालय एन्टिओक में था। बाद में फिलिस्तीन को रोमन प्रतिनिधियों के अधीन रख दिया गया। धार्मिक मामलों में यहूदियों को कुछ हद तक स्वायत्ता प्रदान की गई। अधिकांश यहूदियों ने रोमनों का आधिपत्य स्वीकार कर लिया परंतु उनके बीच बराबर तनाव और मनमुटाव बना रहा क्योंकि यहूदियों ने रोमन देवताओं में आस्था रखने या रोमनों के

आधिकारिक पूजा आदि में भाग लेने से इनकार कर दिया। कई यहूदी इजरायल छोड़कर चले गए और रोमन साम्राज्य के बाहर जाकर बस गए। कुछ दशकों के बाद रोमन राज्य के रोमन शासकों ने यहूदी धर्म को स्वीकार किया और यहूदियों को कुछ हद तक अपने धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करने की छूट दी।

यहूदी धर्म के उत्थान और प्रसार की प्रक्रिया में फिलिस्तीन क्षेत्र में यहूदियों के बीच कई प्रकार के सम्प्रदाय जो विभिन्न धार्मिक व्याख्याओं से युक्त थे, पनपने लगे। इनमें से चार सम्प्रदाय प्रमुख थे। सेडुसीज (Sadducees), सबसे प्रमुख थे जो पैगम्बर मोज़ेज (Moses, मूसा) के विधानों की रूढ़िवादी व्याख्या में विश्वास रखते थे; फैरिसीज (Pharisees) मोज़ेज के विधानों की अलग ढंग से व्याख्या करते थे; एसेनेस (Essenes) शरीर के भौतिक पुनरूत्थान में विश्वास रखते थे और उन्होंने एक तरह के अलग मठ आधारित समुदाय की स्थापना की थी; जैलट्स (Zealots) रोमनों के नियंत्रणों से अपने क्षेत्र को मुक्त करने में विश्वास रखते थे। रोमन शासन और यहूदियों के साथ उनके टकराव से यहूदियों में एक विश्वास पैदा होने लगा कि ईश्वर का भेजा हुआ कोई दूत आएगा और उनके क्षेत्रों को मुक्त कराएगा और सारे यहूदी फिर अपने घरों को लौट सकेंगे। जैलट्स ने रोमन शासन का प्रतिरोध किया और इसके परिणामस्वरूप एक विद्रोह (66–70 ई.) हुआ। रोमनों ने निर्ममता से इस विद्रोह को दबा लिया। जेरूसेलम पर कब्जा कर लिया गया और यहूदियों को दंड दिया गया।

ईसा के जन्म और उनकी आरंभिक दीक्षा को कई लोग पैगम्बर मसीहा के आगमन के रूप में देखते हैं।

17.7.3 परवर्ती रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म

जैसा कि हम जानते हैं कि ईसा मसीह (लगभग 4 ई. पू.–29 ई.) का जन्म यहूदियों के एक पवित्र शहर जेरूसलम के निकट बेथलेहम में एक गरीब परिवार में हुआ था ईसा के जन्म की निश्चित तिथि मालूम नहीं है। माना जाता है कि सन् ई. के पहले वर्ष के आसपास या इससे कुछ समय पहले उनका जन्म हुआ था। हालांकि उनके जन्म से पहले के युग को ईसा पू. और उनके जन्म से ईस्वी सन की शुरुआत मानी जाती है। ईसा तीस वर्षों तक परवर्ती फिलिस्तीन में अपने घरेलू शहर में रहे। परम्पराओं के अनुसार उन्होंने फिलीस्तीन की मरूभूमि में चालीस दिन बिताए। इस मरूभूमि प्रवास के दौरान उन्हें दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ और मरूभूमि के बाहर आने के बाद उन्होंने इस दिव्य ज्ञान का उपदेश सबको देना शुरू किया।

ऐसा प्रतीत होता है कि ईसा इस युग के यहूदी धर्म से काफी असंतुष्ट थे। उनका मानना था कि *रब्बी* (यहूदी धार्मिक प्रमुख और विद्वान) आंतरिक जीवन के नैतिक परिवर्तन के बजाए कानूनी दावपेंच, अनुष्ठानों और रोजमर्रा के नियमों में ज्यादा उलझे रहते हैं। ईसा के विचारों से यहूदी पुजारियों और विद्वानों को खतरा महसूस हुआ जबकि आम यहूदियों ने उन्हें एक मसीहा के रूप में देखा जो उन्हें मुक्त कराने और सच्ची राह दिखाने आया है और वे उसके अनुयायी बन गए। उनके 12 शिष्य काफी प्रसिद्ध थे। रोमन शासकों को भी ईसा से खतरा नजर आया और उन्हें लगा कि विद्रोही उनका समर्थन पाकर रोमन शासन के खिलाफ विद्रोह कर सकते हैं। कुछ यहूदी नेताओं ने ईसा को रोमनों के हाथ सौंप दिया। जुडिया के रोमन गवर्नर पौन्टिअस पिलेट ने 30 ई. में ईसा को मृत्युदंड दिया और उन्हें सलीब पर कील ठोककर मार दिया गया। अपनी मृत्यु के समय उन्होंने कोई अलग धर्म नहीं चलाया था। अलग धर्म की शुरुआत उनके शिष्यों ने की। उनका मानना था कि दफन किए जाने के तीसरे दिन वे पुनर्जीवित हुए। उनके पुनर्जीवन की कथा चारों

ओर फैली और लोगों ने माना कि वे ईश्वर के दूत थे और पृथ्वी पर मनुष्य के दुख को दूर करने और लोगों को स्वर्ग का रास्ता दिखाने के लिए आए थे। इस धारणा और विश्वास के आधार पर एक नए धर्म की शुरुआत हुई जिसे ईसाई धर्म के नाम से जानते हैं।

आरंभ में यह धर्म एक यहूदी सम्प्रदाय मात्र था इसलिए रोमन आरंभ में यहूदियों और ईसाइयों के बीच बहुत स्पष्ट अन्तर नहीं कर सके। क्रिश्चियन यानी ईसाई नाम ईसा को क्राइस्ट या ईसा मसीह (ईश्वर का भेजा हुआ दूत) के नाम पर पड़ा।

ईसा की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों के एक समूह ने उनके संदेशों को चारों ओर फैलाना शुरू किया। इन संदेशों की शुरुआत उनके महान शिष्य साइमन पीटर (सैंट पीटर) ने की। आरंभ में ये शिष्य जेरूसलम में कार्य करते रहे और उन्होंने फिलिस्तीन के कई यहूदियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया। इस उद्देश्य से पीटर ने इटली और रोम के साथ-साथ साम्राज्य के कई हिस्सों में यात्राएं कीं। ईसाई एकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे और वे मूर्तिपूजा के खिलाफ थे। ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले रोमनों ने रोमन देवी-देवताओं की मूर्तियों और मृत सम्राटों की मूर्तियों की पूजा करने से इनकार कर दिया। रोमन सम्राटों ने ईसाइयों को दंडित और प्रताड़ित करना शुरू किया। उन्हें प्रताड़ित करने का एक और कारण यह था कि ईसाई धर्म के उपदेशक रोमन साम्राज्य की आम जनता में काफी लोकप्रिय हो रहे थे। रोमन शासकीय वर्ग ईसाइयों को संदेह की दृष्टि से देखने लगा और रोमन सम्राट नीरो ने पीटर को मृत्युदंड दिया। सेंट पीटर को रोम में रोमन चर्च का संस्थापक माना जाता है। शनैःशनैः मिस्र, एशिया माइनर, यूनान और बाद में गॉल और स्पेन में कई गिरजाघर बनाए गए। ईसा के उपदेशों और कार्यों की कहानियां संग्रहीत की गईं और प्रथम शताब्दी के अन्त तक इसे न्यू टेस्टामेंट के रूप में संकलित किया गया जो बाद में बाइबिल का एक हिस्सा बना। ईसा मसीह के उपदेशों ने गरीबों, मजदूरों और दासों को सबसे ज्यादा प्रभावित किया।

ईसाई धर्म को आगे बढ़ाने में सेंट पॉल (लगभग 5–67 ई.) का योगदान भी उल्लेखनीय है। पॉल का जन्म अनातोलिया के यहूदी परिवार में हुआ था। उन्होंने 37 ई. में ईसाई धर्म ग्रहण किया। उन्हें गिरजाघर का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। पॉल ने ईसा के उपदेशों का प्रचार करने के लिए पूरे रोमन साम्राज्य की यात्रा की और साम्राज्य के अलग-अलग हिस्सों में धर्म प्रचारक भेजे। पॉल एक सुशिक्षित व्यक्ति थे और उन्होंने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए यहूदी धर्म की सुपरिभाषित शब्दावली का इस्तेमाल किया। अपने धार्मिक दस्तावेजों में उन्होंने ईसाई दर्शन पर काम करना शुरू किया जो सभी प्रजातियों के लोगों को प्रभावित कर सके।

17.7.4 ईसाई धर्म का प्रसार

तीसरी शताब्दी ई. में ईसाई धर्म रोमन साम्राज्य का लोकप्रिय धर्म बन गया। साम्राज्यी सरकार ने ज्यादातर राजनीतिक कारणों से ईसाइयों को दंडित किया परंतु रोमन साम्राज्य की आम जनता में ईसाई धर्म की लोकप्रियता या स्वीकृति रोज-रोज बढ़ रही थी।

ईसाई मत ने प्यार के संदेश से जनता को प्रभावित किया। जनता को सीधे ईश्वर से व्यक्तिगत रूप में संबंध स्थापित करने का विचार सामने आया। जो रोमन साम्राज्य से अपने को जुड़ा हुआ नहीं पाते थे और उन्हें एक आस्था और भाईचारे में बांधने की भावना सामने आई। मैरविन पेरी (Marvin Perry) के अनुसार निम्नलिखित कारणों से ईसाई धर्म ने आम जनता को प्रभावित किया:

"बौद्धिकता और आत्मनिर्भरता पर बल देनेवाले यूनानी-रोमन चिंतन ने आम आदमी की भावनात्मक जरूरतों को पूरा नहीं किया। ईसाई धर्म ने यूनानी-रोमन दृष्टिकोण की इस कमी की भारपाई की। गरीब, शोषित और दासों को ईसा के व्यक्तित्व, जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म, सबके लिए उनके प्यार, सम्पूर्ण मनुष्यता के प्रति करूणा और दया भाव ने प्रभावित किया। उनके सामने यह एक आध्यात्मिक धर्म था जहां प्यार का सागर था और जिसमें यह सिखाया गया था कि व्यक्ति के महान होने के लिए उसका अच्छे, अमीर, शिक्षित या प्रखर कुल में जन्म लेने की जरूरत नहीं। दुर्भाग्य और मृत्यु से आतंकित जनता ईसाई मत से प्रभावित हुई जिसने शाश्वत जीवन, स्वर्ग के संसार का वादा किया जहां पिता तुल्य ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होगा। इस प्रकार, ईसाई धर्म में आम आदमी को वह आशा और सम्मान का भाव प्रदान किया जिसका यूनानी-रोमन सभ्यता के अभिजात मूल्यों में पूर्ण अभाव था।"

(मैरविन पेरी, 1990, पृ. 120)

रोमन साम्राज्य का व्यापक विस्तार ईसाई धर्म के व्यापक स्तर पर फैलने का एक प्रमुख कारण था। रोमन साम्राज्य के इलाके राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एकीकृत थे जहां एक कानून, प्रशासन, भाषा व्याप्त थी और ये सड़कों से एक दूसरे से जुड़े हुए थे।

ईसाई धर्म एक ऐसा धर्म था जिसमें कोई भी शामिल हो सकता था और इसमें किसी भी प्रकार की गुप्त दीक्षा नहीं दी जाती थी। अलग-अलग प्रकार के लोगों ने इस धर्म को अपनाया और इसने अमीर और गरीब लोगों को धर्म की एक छत्रछाया में ला खड़ा किया। अब सब लोग बिना किसी भेदभाव के एक जगह पूजा करने लगे, एक ही जगह मृतकों को दफन करने लगे और पुरुष और स्त्री तथा दास और मालिक एक ही जमीन पर खड़े हो गए। कई भक्तों ने निस्वार्थ ईसा मसीह के उपदेशों का प्रचार किया और पूर्ण रूप से अपने को समर्पित किया।

ईसाई मिशनरियों ने गरीब लोगों को जागरूक करना शुरू किया। समस्त मानव जाति के प्रति सौहार्द और बंधन के भाव से युक्त ईसाई समुदायों के सामाजिक संगठन ने इस जागरूकता अभियान का नेतृत्व किया। ईसाई मिशनरियों ने जरूरतमंदों के लिए किए जाने वाले राहत कार्यों को भी अपने हाथ में ले लिया। ईसा ने कहा था, "अपने पड़ोसियों को अपना मानकर प्यार करो" और मिशनरियों ने उनके इस वचन का पालन किया।

व्यापार और वाणिज्य के माध्यम से भी ईसाई धर्म रोमन साम्राज्य के अन्य हिस्सों में फैला। व्यापारिक और वाणिज्यिक केन्द्रों तक रहने वाले लोगों तक पहुंचना ज्यादा आसान था। सीरिया में एन्टिओक, एफेसस (Ephesus) और एशिया माइनर के अन्य शहर कोरिन्थ, थेसालोनिया और रोम द्वितीय शताब्दी के अंत से धर्म के तीव्र प्रचार केन्द्र बन गए। मिस्र और अफ्रीका के अन्य हिस्से भी ईसाई जीवन और उपदेश के प्रमुख केन्द्र बन गए।

प्रेम और बंधुत्व के संदेश के अलावा चर्च/गिरजाघर ने एक संस्था के रूप में पूरे रोमन साम्राज्य में ईसाई मत को फैलाने में मदद की। आरंभिक चर्च/गिरजाघर ने धर्मशास्त्र का विकास किया और ईसाई धर्म की प्रशासनिक संरचना निर्मित की। रोमन समाज बहुदेववादी समाज था जहां एक पुरुष कई पंथों और धर्म सिद्धांतों से जुड़ा हुआ था। इसलिए एक संगठित संगठन अनिवार्य था। प्रत्येक सभा के सदस्य पुरोहित बन गए और प्रत्येक शहर में एक पुरोहित को बिशप की पदवी दी गई। बिशप को अपने शहर में सभी ईसाई सभाओं की देखरेख का जिम्मा सौंपा गया। दूसरी शताब्दी के अन्त तक कुछ बिशपों को प्रांतों का नेता घोषित किया गया। उन्हें विभिन्न व्याख्याओं और सिद्धांतों पर उभरे मतभेदों को सुलझाने का काम सौंपा गया। सबसे पहले त्रित्व (Trinity) के सिद्धांत

पर विवाद पैदा हुआ। प्रीस्ट एरिअस (Priest Arius) (250–336 ई., अलेक्जेंडिरया के एक यूनानी पुजारी) ने तर्क दिया कि पुत्र और पवित्र आत्मा की उत्पत्ति परमपिता ईश्वर ने की है। इसलिए वह उसके अधीन है। अन्य धर्मशास्त्रियों ने इस तर्क का खंडन किया और ईसाई धर्मशास्त्रियों के बीच कटु विवाद पैदा हो गया। इन मतभेदों को सुलझाने के लिए कौन्सटैनटाइन ने नाइकिया (एशिया माइनर) में 325 ई. में बिशपों की एक परिषद बुलाई। नाइकिया के परिषद में इस विषय पर बहस होने के बाद सब ने एकमत होकर एरिअस के मतों को पूरी तरह खारिज कर दिया। परंतु इसी परिषद से सारे मतभेद दूर न हो सके और नए-नए सैद्धांतिक मतभेद उभरते रहे तथा इसे सुलझाने के लिए बार-बार बिशप परिषद का आयोजन किया जाता रहा। जिन लोगों ने इन परिषदों के बहुमत से हुए इन निर्णयों को स्वीकार नहीं किया उन्हें ईसाई धर्म से निष्कासित कर दिया गया। मोटे तौर पर चौथी शताब्दी के अन्त तक कैथोलिक चर्च पूरे रोमन साम्राज्य पर छा गया। आरंभिक चर्च का व्यवस्थित संगठन प्राचीन संसार के लिए एक नई घटना थी। इससे रोमन साम्राज्य के कई धार्मिक सम्प्रदायों पर ईसाई धर्म की सर्वोच्चता स्थापित करने में मदद मिली। रोम के बिशप को साम्राज्य के अन्य बिशपों से ऊंची हैसियत प्राप्त थी क्योंकि आमतौर पर यह स्वीकार किया जाता था कि सेंट पीटर (ईसा मसीह के उत्तराधिकारी) ने रोम में चर्च की स्थापना की थी और वहीं वे शहीद भी हुए थे। रोम के बिशप को बाद में पोप कहा जाने लगा और पूरी दुनिया के चर्चों में उसे सर्वोच्च दर्जा हासिल हुआ।

17.7.5 ईसाई धर्म और रोमन राज्य

तीसरी शताब्दी के दौरान ईसाई धर्म का प्रचार इतनी तेजी से हुआ कि रोमन राज्य और सम्राट के कान खड़े हो गए। इसके अलावा कई ऐसी घटनाएं घटीं जिससे वे राज्य की आंखों के किरकिरी बन गए।

> "बहुत से रोमनों की नजरों में ईसाई सामाजिक व्यवस्था के दुश्मन थे – ये कैसे लोग हैं जो न तो राज्य के देवताओं को मानते हैं और न ही रोमन उत्सवों में शामिल होते हैं और तलवारबाजी की प्रतियोगिता को घृणा की दृष्टि से देखते हैं, सार्वजनिक स्थानों से दूर रहते हैं, अहिंसा को महिमामंडित करते हैं, मृतक सम्राटों को ईश्वर के रूप में नहीं पूजते हैं और सूली पर चढ़ाए गए एक 'अपराधी' को अराध्य मानते हैं। अंत में रोमनों ने साम्राज्य पर आई सारी विपदाओं जैसे–अकाल, प्लेग ओर सेना की पराजय का सारा ठीकरा ईसाइयों के मत्थे फोड़ दिया।"
>
> (मैरविन पेरी, 1990, पृ.121)

ईसाई धर्म को कुचलने और दबाने के लिए बड़े पैमाने पर लम्बे समय तक दंड और प्रताड़ना का सिलसिला चलता रहा। इन दमनात्मक कार्रवाइयों से ईसाई धर्म की लोकप्रियता और प्रसार को रोका न जा सका।

सम्राट डायक्लीशन ने ईसाई धर्म की लोकप्रियता को दबाने का निर्णय लिया। 24 फरवरी, 303 को डायक्लीशन ने घोषणा की कि ईसाई और चर्च की सम्पत्ति तथा धार्मिक कार्यों के लिए उपयोग की जानेवाली पुस्तकों को जब्त कर लिया जाए। सेना और नौकरशाही को आदेश दिया गया कि इसकी अवहेलना करने वाले ईसाई मौत के घाट उतार दिए जाएं। इस राज्यादेश के आधार पर कई क्षेत्रों में बड़ी संख्या में ईसाइयों की हत्या कर दी गई। सम्राट ग्लैरिअस (Galerius) डायक्लीशन के इस अध्यादेश से सहमत नहीं था और 30 अप्रैल, 311 को उन ईसाइयों के प्रति सहिष्णुता बरतने का आदेश जारी किया जो मूर्ति पूजा की ओर लौटने के इच्छुक नहीं थे।

रोमन राज्य द्वारा ईसाइयों के दमन के बावजूद तीसरी और चौथी शताब्दी में ईसाई धर्म तेजी से फैल रहा था। हजारों ईसाई रोमन सेना में भी शामिल हो चुके थे और साम्राज्य के पूर्वी हिस्से में वे नौकरशाही में भी शामिल हो चुके थे। 312 में मुल्वियन ब्रिज (Mulvian Bridge) के युद्ध के बाद कौन्सटैनटाइन ने सहिष्णुता का आदेश जारी किया और ईसाइयों की प्रताड़ना समाप्त हुई। इस घोषणा के बाद ईसाई धर्म का प्रभाव काफी बढ़ गया और चौथी शताब्दी के अन्त में यह साम्राज्य का सर्वप्रमुख धर्म बन गया। उसने भी ईसाई धर्म ग्रहण किया और वह ईसाई धर्म ग्रहण करनेवाला पहला रोमन सम्राट बना। लगभग 392 ई. तक थियोडोसिअस (Theodosius) ने आदेश जारी कर ईसाई धर्म को साम्राज्य का राज्य धर्म बना दिया और मूर्ति पूजा को कानून विरूद्ध कर दिया।

धीरे-धीरे दूसरे देशों में भी ईसाई धर्म फैलने लगा और रोमन साम्राज्य के बाहर भी इसके पांव पसरने लगे।

17.8 सारांश

इस इकाई में हमने परवर्ती रोमन राज्य, समाज और धर्म की चर्चा की। परवर्ती रोमन राज्य निरंकुश राजतंत्रीय राज्य था। रोमन सम्राट एक संप्रभुसत्ता थी और उसे ईश्वर के दिव्य गुणों से सम्पन्न ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था। रोमन सम्राट देवी-देवताओं का भी प्रतीक था। सेनेट, सेना, नौकरशाही और न्यायिक तंत्र जैसे राज्य के घटकों पर पैट्रिशियन संभ्रांत वर्ग का नियंत्रण था। इस युग में रोमन साम्राज्य पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों में विभाजित था। तीसरी शताब्दी के अन्त में डायक्लीशन और मैक्सिमियन के संयुक्त शासन के दौरान प्रशासन के विकेन्द्रीकरण का प्रयास किया गया। अभी भी रोमन साम्राज्य मुख्य रूप से उत्पादन के लिए दासों पर निर्भर था और दासों के श्रम से उत्पन्न उत्पादन के अधिशेष को संभ्रान्त वर्ग हथिया लेता था। परवर्ती रोमन समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित था। साम्राज्य के विकसित शहरी केन्द्रों में मुख्य रूप से पैट्रिशियन और दासों के मालिक रहा करते थे जो शासकीय और प्रमुख वर्ग थे और इन वर्गों का ही चारों ओर दबदबा था। प्लेबियन, मुक्त काश्तकार, कोलोनेट, शहरी सर्वहारा और दास रोमन साम्राज्य के निम्न वर्ग में शामिल थे। निम्न वर्ग के पास कोई सम्पत्तिगत अधिकार नहीं था और बाजारों में पशुओं के समान दास खरीदे और बेचे जाते थे। कोलोनि या बटाईदारों का उदय एक महत्वपूर्ण घटना थी।

परवर्ती साम्राज्य आरंभिक चरण में भी रोमन शहर और साम्राज्य के अन्य हिस्सों में रोमन गणतंत्र के कई धार्मिक सम्प्रदाय कायम रहे। रोम और साम्राज्य के अन्य हिस्सों में बृहस्पति और मंगल प्रमुख देवता थे। यहां तक कि रोमन रोम की आत्मा और कुछ रोमन सम्राटों की मूर्तियों की पूजा करते थे। ज्यादातर मामलों में रोमन राज्य आम जनता की धार्मिक परम्पराओं में हस्तक्षेप नहीं किया करते थे और सामान्य तौर पर धर्मों के प्रति उन्हें सहिष्णु माना जाता था। परंतु रोमन राज्य यह भी चाहता था कि साम्राज्य की जनता राज्य के धार्मिक उत्सवों में हिस्सा ले। साम्राज्य के पूर्वी भाग में यहूदी धर्म और बाद में ईसाई धर्म का बोलबाला रहा। ईसाई धर्म पश्चिमी हिस्सों में भी तेजी से फैला। ईसाई धर्म के आरंभिक चरण में ईसा मसीह के अनुयायियों को रोमन राज्य के हाथों प्रताड़ना झेलनी पड़ी। परंतु तीसरी और चौथी शताब्दी में राज्य ने इसे स्वीकार कर लिया और पश्चिमी यूरोप तथा साम्राज्य के पूर्वी हिस्सों के लोगों का यह लोकप्रिय धर्म बन गया। सम्राट कौन्सटैनटाइन ईसाई धर्म को अपनाने वाला पहला रोमन सम्राट था और चौथी शताब्दी के अंत तक यह रोमन साम्राज्य का राज्य धर्म बन गया। वस्तुतः ईसाई धर्म के प्रसार में आम जनता के उत्साह का बड़ा योगदान था। इसमें साम्राज्य के विस्तार, राजनीतिक और

सामाजिक सौहार्द और साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के सड़कों से जुड़े होने का भी योगदान रहा।

17.9 अभ्यास

1) तीसरी शताब्दी तक रोमन साम्राज्य में हुए विस्तार की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

2) परवर्ती रोमन साम्राज्य के राज्य और प्रशासन का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

3) रोमन समाज में निम्न वर्गों और दासों की क्या स्थिति थी ?

4) रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म की स्थापना और प्रसार की प्रक्रिया पर विचार कीजिए।

5) निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए।

   क) रोमनों की सेना

   ख) रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म की स्थापना के पहले के धार्मिक सम्प्रदाय